राम लाल आनंद महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

राम लाल आनंद महाविद्यालय
बेनितो जुआरेज़ मार्ग,
नई दिल्ली -110021
एवं
भारतीय अनुवाद परिषद् के

तत्वावधान में

अनुवाद प्रमाण – पत्र पाठ्यक्रम

संयोजक
डॉ नीलम ऋषिकल्प
(M) 9810672284
(Mail) drneelamri@gmail.com

संयोजक

डॉ राकेश कुमार गुप्ता, प्राचार्य
डॉ नीलम ऋषिकल्प, हिंदी विभाग

सहयोग समिति

डॉ. सुभाष चंद्र डबास
डॉ. राकेश कुमार
डॉ. संजय कुमार शर्मा
डॉ. अर्चना गौड़
डॉ. श्रुति आनंद
डॉ. दिनकर सिंह
डॉ. राजेश कुमार
डॉ. अशोक कुमार मीणा
डॉ. मानवेश नाथ दास
डॉ. सुरेन्द्र कुमार
डॉ. लक्ष्मी देवी

विशिष्ट सहयोग : डॉ. अटल तिवारी

पाठ्यक्रम आरंभ तिथि
12 जनवरी 2019

पाठ्यक्रम की अवधि
(त्रैमासिक : 40 घंटे)
विद्यार्थियों की संख्या
50
पहले आओ पहले पाओ के आधार पर
योग्यता
सभी विषयों के स्नातक विद्यार्थी
समयसारिणी
शनिवार 10 से 2 बजे तक
प्रवक्ता संकाय
विशेषज्ञ अतिथि
पंजीकरण
महाविद्यालय की वेबसाइट www.rlacollege.edu.in पर आवेदन करें। या Click करें
आवेदन की अंतिम तिथि
10 जनवरी 2019

कोर्स फीस – रूपए 1500

फीस भरने की प्रक्रिया

NEFT/RTGS can be made in the
Account Name
Principal, Ramlal Anand College
Account Number 403502010005997
Bank & Branch
UBI, Anand Niketan
IFSC : UBIN0540358
Reciept may be submitted
rla.du.ac.in

राम लाल आनंद महाविद्यालय

राम लाल आनंद महाविद्यालय की स्थापना 1964 में दिल्ली विश्वविद्यालय के अन्तर्गत हुई। इसके संस्थापक सर्वोच्च न्यायालय के वरिष्ठ वकील स्वर्गीय रामलाल आनन्द हैं। दक्षिण परिसर में अरावली पहाड़ियों के बीच कालेज विशिष्ट प्राकृतिक मनोरम छटा के साथ स्थित है। यह महाविद्यालय अद्भुत आधारित संरचना के साथ प्रयोगशाला, पुस्तकालय, कैंटीन, खेल मैदान और वाई-फाई की सुविधा से संपन्न है। बहुविषयी सहशिक्षक वाले इस महाविद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या 2100 के लगभग है। 14 विषयों (कला, वाणिज्य और विज्ञान संकाय) के स्नातक पाठ्यक्रम को चलाने में उच्च शिक्षित एवं प्रतिबद्ध लगभग 85 शिक्षक कार्यरत् हैं। सभी शिक्षक विद्यार्थियों को सेमिनार, कार्यशाला, संगोष्ठी, रंगमंच, सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए निरंतर प्रोत्साहित करते रहते हैं, जिसके परिणाम स्वरूप विद्यार्थी सदैव नया सीखने के लिए तत्पर रहते हैं।

अनुवाद की उपयोगिता

आधुनिक युग में अनुवाद की महत्ता व उपादेयता को विश्वभर में स्वीकारा जा चुका है। वैदिक युग के 'पुन: कथन' से लेकर आज के 'ट्रांसलेशन' तक आते-आते अनुवाद अपने स्वरूप और अर्थ में बदलाव लाने के साथ-साथ अपने बहुमुखी व बहुआयामी प्रयोजन को सिद्ध कर चुका है। प्राचीन काल में 'स्वांत: सुखाय' माना जाने वाला अनुवाद कर्म आज संगठित व्यवसाय का मुख्य आधार बन गया है। दूसरे शब्दों में कहें तो अनुवाद प्राचीन काल की व्यक्ति परिधि से निकलकर आधुनिक युग की समष्टि परिधि में समा गया है। आज विश्वभर में अनुवाद की आवश्यकता जीवन के हर क्षेत्र में किसी-न-किसी रूप में अवश्य महसूस की जा रही है। और इस तरह अनुवाद आज के जीवन की अनिवार्य आवश्यकता बन गया है।

भारतीय अनुवाद परिषद्

भारतीय भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन में अनुवाद की जरूरत को ध्यान में रखते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय के शिक्षकों व प्रोफेसरों के सहयोग से डा. गार्गी गुप्ता ने 1964 में भारतीय अनुवाद परिषद की स्थापना की। अनुवाद के क्षेत्र में विशेष तौर पर काम करने के लिए यह संस्था तब से लेकर अब तक निरंतर प्रगति की राह पर है। यहां कुशल अनुवादक बनाने के लिए एक वर्षीय पीजी डिप्लोमा का कोर्स कराया जाता है। इसे पार्ट टाइम के रूप में कोई भी छात्र कर सकता है। कक्षाएं शाम को होती हैं। संस्थान अनुवाद की पत्रिका और अनुवाद के क्षेत्र में बेहतरीन कार्य के लिए हर वर्ष विभिन्न विद्वानों को पुरस्कृत भी करती है। इसे मानव संसाधन विकास मंत्रलय ने विशेष तौर पर स्वीकृति प्रदान की है।

पता : 24 स्कूल लेन, बंगाली माकेट, नई दिल्ली